चीनी कंपनियों ने कराया इनवेस्टर्स का मुंह मीठा

[पलक शाह | मुंबई]

इनवेस्टर्स का चीनी कंपनियों के शेयरों पर लगा दांव बहुत मीठा रिटर्न दे रहा है। इस महीने की शुरुआत से स्टॉक एक्सचेंज पर चीनी कंपनियों में तेजी का दौर चल रहा है। ग्लोबल मार्केट में चीनी की कमी के आसार पैदा होने के चलते इन कंपनियों के शेयरों में 20 से 80 पर्सेंट तक उछाल आया है।

ब्रोकरेज फर्म शेयरखान के वाइस प्रेसिडेंट देवांग कामदार के मुताबिक, 'चीनी कंपनियों के शेयरों में तेजी जारी रह सकती है क्योंकि उसमें इंडस्ट्री के फंडामेंटल्स में आया बदलाव दिख रहा है। इंटरनेशनल मार्केट में चीन की कीमत और बढ़ सकती है। शेयरों की कीमत शॉर्टिंग के चलते चढ़ रही है। चीनी की कीमतें बढ़ने पर हर 10 में से 8 कंपनियां ऑपरेटिंग लेवल पर मुनाफे में आ सकती हैं। इससे उन्हें लोन चुकाने में मदद मिलेगी।'

डालमिया भारत शुगर, द्वारिकेश शुगर, धामपुर शुगर, शक्ति शुगर, सिंभावली शुगर, अपर गैंगेज शुगर और मवाना शुगर जैसी चीनी कंपनियों के शेयरों में पिछले दो हफ्तों में 50 पर्सेंट से ज्यादा उछाल आया है। 16 दूसरी चीनी कंपनियों के शेयरों की कीमत इस दौरान 20 पर्सेंट से ज्यादा बढ़ी है।

न्यूयॉर्क के कमोडिटी एक्सचेंजों पर ट्रेड होनेवाले फ्यूचर्स कॉन्ट्रैक्ट में एक्टिविटीज बढ़ गई है। सबसे ज्यादा एक्टिव कॉन्ट्रैक्ट्स में अगस्त से अब तक 16 पर्सेंट की मजबूती आ चुकी है। यह पिछले दो साल में सबसे ज्यादा तेजी है। खबर है कि ग्लोबल मनी मैनेजर्स ने 13 अक्टूबर को खत्म हुए हफ्ते में चीनी पर अपनी नेट लॉन्ग पोजिशन 33 पर्सेंट बढ़ाकर 117,090 F&O कॉन्ट्रैक्ट्स तक कर ली थी। इसका पता अमेरिकी कमोडिटी फ्यूचर्स ट्रेडिंग कमीशन के डेटा से चलता है। यह जुलाई 2014 के बाद सबसे ज्यादा है। पिछले आठ हफ्तों में से सात में चीनी पर शॉर्ट पोजिशंस में कमी आई है।

- ग्लोबल मार्केट में चीनी की कमी के आसार पैदा होने के चलते शुगर फर्मों के शेयरों में 20-80% तक उछाल आया

एनालिस्टस का कहना है कि चीनी की कीमतें सात साल के लो लेवल से उबर रही हैं। दरअसल, अल नीनो का माहौल बनने से ऑस्ट्रेलिया में शुगर प्रॉडक्शन घट सकता है। इसके अलावा दुनिया के सबसे बड़े शुगर प्रोड्यूसर्स-इंडिया से लेकर ब्राजील तक की मिलों में प्रॉडक्शन में कमी आ सकती है। चीन में अगस्त तक चीनी का इंपोर्ट साल दर साल आधार पर 50.7 पर्सेंट ज्यादा हो गया था। दुनिया के सबसे बड़े चीनी इंपोर्टर चीन में कंजम्पशन ग्रोथ के बीच प्रॉडक्शन में कमी की प्रॉब्लम पैदा हो रही है।

कोटक सिक्योरिटीज के रिसर्च हेड दीपेन मेहता कहते हैं, 'इंडिया में चीनी कंपनियों के शेयरों की असल री-रेटिंग तब होगी, जब चीनी की कीमतों को डीरेगुलेट करके उसको मार्केट प्राइस से कनेक्ट कर दिया जाएगा। चीनी की कीमतों पर सरकारी रेगुलेशन होने से चीनी शेयरों की कीमत में हैंगओवर बनता है।' इंडिया में चीनी कंपनियों के शेयरों कीमत पर इसलिए प्रेशर बनता है कि गन्ने की खरीद कीमत और मात्रा सरकार तय करती है।

Economic Times

23-10-15